पंजाब के लोकगीत : नारी हृदय का स्वच्छ दर्पण

DR. SHRUTI HORA
Associate Professor, Music, PGGCG, Sector 11, Chandigarh

सार संक्षेपिका

पंजाबी लोक गीतों का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि भले ही हम जितना भी यत्न करें हम इन्हें पूर्णरूपेण सम्मुख नही रख सकते। पंजाब के लोक गीतों में स्त्रियों ने सुई से लेकर तलवार तक अर्थात छोटी से छोटी चीज से लेकर बड़ी से बड़ी चीज तक का प्रयोग किया है। यहाँ तक इन्होने डाची, सुई, चरखा, अमृतसर की बड़िया, पापड़, जुगनी इन सभी पर सुन्दर गीत रच डाले है। विरह और वेदना को लेकर रचे लोक गीत ऐसे है जिन्हे सुनकर पत्थर से पत्थर दिल भी पिघल जाते है और आँखें भर जाती है। इन गीतों के माध्यम से जीवन में विचित्रता बनी रहती है। इन समूचे पंजाबी लोकगीतो को गाने के लिए अपनी स्वतन्त्र विधाए और राग है।

बीज शब्द

पंजाब, लोकगीत, नारी

भूमिका

लोकमानस की भावनाओं और उसकी तरंगो से उत्पन्न संगीत को लोकसंगीत कहा जा सकता है। यह सत्य है कि कोई भी रचना व्यक्ति विशेष के ही माध्यम से ही होती है लेकिन जब उस रचना के रचनाकार का या गायक का नाम महत्वपूर्ण न होकर उसका काम महत्वपूर्ण हो जाता है तो वह रचना या गायिकी लोक संगीत बन जाती है। लोकसंगीत का जन्म लोकमानस से हुआ है और लोक मानस का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना की मनुष्य का जन्म। इस दृष्टि से लोक संगीत का जन्म भी मनुष्य के जन्म की तरह पुरातन है। इन्ही लोक–गायकों की रचनाए लोक कंठ में इस प्रकार बैठ जाती है कि हर युग में नई पीढ़ियों को अपने लिए विशेष रूप में प्रासांगिक लगती है। यही स्थिति उन असंख्य लोक गीतों की होती है जिन्हे अनाम अनपढ़ किन्तु जीवन संज्ञान से जीवंत कवियों ने लिखा, गाया और पीढ़ियों तक मौखिक परम्परा के माध्यम से पहुंचाया। यही वजह है कि सदियों से चली आ रही इस परम्परा को जनता ने लोक साहित्य का सम्मान देकर अपने जीवन के हर मोड़ पर, हर सुख–दुःख में अपने साथ खड़ा पाया है।

किसी भी साहित्य की सब से बड़ी आकांक्षा यही होती है कि वह लोक कंठ में बस जाय, लोक चेतना का अंग बन जाये अर्थात लोक साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित हो जाये। लोक चेतना का अंग वह बनता है जो तन्त्र का तिरस्कार और लोक को स्वीकार करता है यही वजह है कि हिन्दी काव्य का जो श्रेष्ठतम अंश है। वह लोक साहित्य के रूप में लोकमानस का अभिन्न अंग बना हुआ है।

लोक गीत मनोभावों को व्यक्त करने का सब से सरल और सशक्त माध्यम है। इस का क्षेत्र इतना व्यापक है कि मानव जीवन के समस्त क्रिया–कलाप इसमें सन्निहित है। जीवन का कोई भी पहलू इससे अछूता नही है। विरह–मिलन, हर्ष–विशाद, मधुरता–कटुता आदि सब कुछ लोक गीतों में प्रतिबिम्बित होता है। लोक गीतों में प्रमुख रूप से श्रृंगार रस दिखाई देता है। जिसमें श्रृंगार रस के दोनो पक्षों संयोग तथा वियोग में नारी की वेदना का भाव अधिक मार्मिक एवं उत्कृष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

वेदना एक अव्यक्त एहसास है जिसे हम न छू सकते है, न सुन सकते है और न ही देख सकते है। यह ह्रदयगत मनोभावों की वह व्यथा है जो गीतों के माध्यम से प्रभावित होकर मन में उमड़ते–घुमड़ते बादलों से बरसकर सदैव निर्झरणी की भांति बहती रहती है। वेदना की निरन्तरता ही लोक गीतों में आनन्दाभूति का सशक्त माध्यम बनती है।

नारी को शक्ति का प्रतीक माना गया है। नारी का प्रमुख गुण सहनशीलता है परन्तु जब उसकी सहनशीलता असहनीय हो जाती है तब उसकी वेदना फट पड़ती है। वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए गीतों का सहारा लेती है। लोक गीत और नारी को यदि एक दूसरे का प्रयाय कहा जाये तो शायद गलत नही होगा। लोकगीत की रचनाओं में नारियों का विशेष योगदान होता है।

नारी परिवार की धुरी होती है। परिवार से ही समाज और समाज से प्रान्त व राष्ट्र का निर्माण होता है। अतः राष्ट्र के निर्माण मे नारी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसके बावजूद भी नारी को हर तरह से कष्टो का सामना करना पड़ता है। लोक गीतों मे पारिवारिक–अर्न्तसंबंधो, स्थितियों तथा तत्वों का चित्रण व्यापक फलक पर हुआ है। नारी के दैनिक, सामाजिक आदि कार्यो की झलक लोकगीतों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। युवक तथा मदमस्त युवतियाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक लोक संगीत को मधुर धुनों में पलते बढ़ते है। इन लोकगीतों की विशाल भावना को सम्मुख रखते हुए कहा जाता है कि मनुष्य का बचपन लोरियों में, थालों और किलकारियों में गुजरता है, घोड़ियो, सिठनियो, छन्दो तथा सुहागों में ब्याहा जाता है। ढोला, माहिया, टप्पे, बोलियों तथा जिन्दुआ में जवानी व्यतीत करता है। जब इस संसार से जाता है तो वैन, कीरने तथा अलाहुणियों आदि गीत अन्तिम संस्कारों का रूप धारण करते है। लोरियों से लेकर अलाहुणियों तक यह लोकसंगीत जीवन लीला को जन्म से मृत्यु तक सुर–ताल से बाँधता है।

लोकगीतों में भिन्न–भिन्न प्रान्त के लोगो के जीवन का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन का पूर्ण विवरण मिलता है। जैसे पंजाबी लोकगीत जो पंजाबी लोकसंगीत की धूरी है, श्रेष्ठता के पक्ष से सर्वश्रेष्ठ है। यह लोकगीत हर पल, हर क्षण पंजाबियों के जीवन की अलग–अलग परिस्थितियों की सामूहिक अभिव्यक्ति है अथवा यू भी कह सकते है कि पंजाबी लोकगीत पंजाबियों के रंगीले जीवन की मुँह बोलती तस्वीर है।

पंजाब के लोकगीतों के रूप की दृष्टि से कई विधाएं है–घोड़िया, सुहाग, छन्द, सोहिले, सिठणियां, अलाहुणिया, वैन, पहिरे, सतवार, बारामाह, सद, ढोला, माहिया, टप्पे, बोली और कोयल आदि है। पंजाबी जीवन की समस्त प्रवृतियाँ अपनी धड़कन सहित सुर और ताल होकर गीतो में स्पष्ट सुनाई देती है। पजाबियों की छन–छन करती हसी, बिलखती पीड़ा, रूठना–मनाना, व्यग्ंय और टीका–टिप्पणी, अनेक स्वर लहरियों के रूप में इन गीतों मे सजीव है। यह गीत पंजाबियों के दिल की धड़कन तथा आत्मा की आवाज है।

पंजाबी लोकगीत होठो पर मिशरी की तरह घुल जाते है। इनकी भाषा सरल तथा साधारण होने के कारण सहज जी मुँह पर चढ़ जाती है। इन गीतों के लिए किसी परिश्रम की आवष्यकता नहीं होती। पंजाबी गीत लय और लय से झलकते हुए तूम्बे के समान है जिनकी तारों को अनाड़ी हाथ भी लग जाये तो रस का झरना फूट पड़ता है। पंजाब के लोकगीतो में सुकोमल नारी ह्रदय का निर्मल स्वच्छ दर्पण दिखाई देता है। यही नही कि पंजाब के पुरूषो का इसमें योगदान नही है। ढोला और माहिया जैसे मधुर गीत पुरूषों द्वारा ही रचित है। लेकिन विवाह, बेटी की सगाई, पतिप्रवास, भाई का प्यार, माँ की ममता, सास बंहु की इर्ष्या आदि भावनाए इन महिला लोकगीतों में अधिक मिलती है। दैनिक जीवन के व्यवहारिक गीतों में भी महिलाएं अपने मन की भावनाए उन्मुक्त रूप से व्यक्त करती है। पंजाबी लोकगीतों का अधिकतम भाग महिलाओं द्वारा रचित होने के कारण ''पंजाबी गीतो की मिठास का कारण उनके कच्चे दूध के स्वाद जैसी बोली, छन–छन करती हंसी जैसे ताल, ठुमक–ठुमक चलती छन्दो–बन्दी है। यह सभी तत्व ही स्वभाव मे सरोदी है और गीतों में पूर्णतया गूंथे हुए है।

परम्पराओं से पंजाबियों को बहुत लगाव है। आदिकाल से चले आ रहे संस्कार इन के रक्त में रचे–बसे हुए है। संस्कारों से जुड़ी भावना ने अनेकों लोकगीतों को जन्म दिया जो पंजाबियों के जीवन का अभिन्न अंग बने हुए है। पंजाब की स्त्रियां सब से

अधिक आनन्द संस्कार गीतों मे लेती है। वास्तव मे यह वही गीत है जो स्त्रियां शादी–विवाह तथा अन्य संस्कारों तथा रीति–रिवाजों के अवसरों पर गाती है। चूंकि स्त्रियाँ अपना अधिक समय घर की चार–दिवारी मे ही व्यतीत करती है तथा पुरूष की अपेक्षा घर से अधिक जुड़ी होती है ऐसी अवस्था मे घर में जब भी कोई रस्म तथा रीति–रिवाज होते है तो उनके मन में सिमटे हुए भाव शीघ्र ही उमड़ पड़ते है तथा गीतो के रूप धारण कर लेते है। यही कारण है कि अधिक गीत स्त्रियों के हिस्से ही आते है। बधाई, हरिया, सोहले, सुहाग, घोड़िया , बटने के गीत, सिठनिया, अलाहुणिया आदि उनके गुलदस्ते के फूल मात्र है। जन्म संबंधी लोक गीतो में–

कर्मा बाझो पुत्तर नही लभदे

तथा

जमदड़ा पट वलेटिया, हरिया नी माए हरिया नी भैणो
हरिया ते भागी भरिया
जित दिहाड़े मेरा हरिया नी जमिया
सोई दिहाड़ा भागा भरिया।

यह गीत बच्चे के जन्म होते उसे बड़े–बूढ़ो के पुराने कपड़े मे से कपड़ा फाड़कर लपेटा जाता है परन्तु माँ को यह चिथड़ा रेशम लगता है क्योंकि उसमें उसका बच्चा लपेटा होता है।

पंजाबी लोकगीत पालने से ही आरम्भ हो जाते हैं। लोरी की लय में एक अनूठी मस्ती होती है। यह बच्चे को सपनो की दुनिया में ले जाती है। रोता–कुरलाता बच्चा उस लय मे मुग्ध हो जाता है। लोरियां प्रायः तिलंग और भैरवी रागनियों में गाई जाती है।

सो जा मेरया लाडलेया नानकेया नू जावागे,
झग्गा चुन्नी लिआंवागे
नानी दित्ता घियो जीवे लाल दा पियो।

इस लोरी में माँ ने अपने बच्चे को नानी के घर जाकर वहाँ से वस्त्र, घी लाते हुए अपने बच्चे के पिता की दीर्घ आयु की कामना की है। पंजाबी गीतो में आयू दर्शाने वाले गीत भी प्रचार मे है जैसे–

बारा वरे दी जै कौर हो गई, वरा तेरहवा चढ़िया
मित्रा नू फिकर पिया वियाह जै कौर दा धरया।।

संस्कार गीतों में सब से दिलचस्प और भावनाओं से ओत–प्रोत गीत शादी के गीत है। इन गीतों में जहाँ खुशी के गीतों में हास्य रस तथा श्रृंगार रस विद्यमान है वहाँ

सौन्दर्य, वियोग तथा विरह भी इन गीतो का विषय है। लड़कियों की ओर से गाये जाने वाले वियोग के गीत हर मन को प्रभावित करते है। पुत्र के विवाह पर अपने–अपने मोहल्ले की औरते इकट्ठी होकर रात को गीत गाती है। लड़को के विवाह के समय स्त्रियों की ओर से गाये जाने वाले गीतों को घोड़ियाँ कहा जाता है। इनका संबंध घोड़े पर चढ़ने की रस्म से जोड़ा जाता है। विवाह संस्कार, रिश्ते–नाते आदि सब इस की सीमा में आ जाते है। विशेष रूप से बहन, भाबी, चाचा–चाची, दादा–दादी, मामा–मामी, आदि को रखा जाता है तथा इनका यश गाया जाता है। इन गीतों में खुशी के भाव अधिक होते है।

निक्की–निक्की बुंदी निकेया मीह वे वरे
वे निकेया माँ वे सुहागन तेरे सगन करे।
वे निकेया भैन सुहागन तेरी वाग फड़े।
वे निकेया भाबी सुहागन तैनू सुरमा पावे।

इसी प्रकार लड़की की शादी पर सुहाग गाये जाते है। इन गीतों में पंजाबी लड़कियों के भावों तथा इच्छाओं तथा सयोग–वियोग का कलामयी वर्णन किया जाता है इन गीतों में लड़की के सुसराल जाने तथा माता–पिता से बिछुड़ने का वर्णन संकुचित प्रभावपूर्ण शब्दों में किया है। इन गीतों में सौन्दर्य की भावना अधिक प्रधान होती है। सुहाग का एक प्रकार इस प्रकार है–

साडा चिड़िया दा चम्बा वे, बाबुल असा उड वे जाना
साडी लम्बी उडारी वे, बाबुल केहड़े देस जाना।
तेरे महला दे विच–विच वे, बाबुल डोला नही लघंदा
इक इट पुटा देवा धीये घर जा अपने।

यह लोकगीत दीपचन्दी ताल में निबद्ध है। इस गीत में खमाज थाट के भिन्न रागों की झलक दृष्टि गोचर होती है। समूचे तौर पर यह लोक गीत लोक संगीत की उत्तम प्रकार है और बहुत प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय भी है।

पंजाब मे विवाह के समय समूचा वातावरण खुशी तथा उल्लासपूर्ण होता है। हर बराती सज संवर कर आता है तथा लड़की वालो की ओर से लड़कियाँ उन का मजाक उड़ाने से नही चूकती, ऐसे समय वह सामूहिक रूप से सिठनियां गाती है। इस में व्यंग्य तथा मुस्कराहट के भाव प्रधान होते है। सिठनी का उदाहरण निम्नलिखित है

लज्ज तुहानू नही
साडे ता विहड़े मुढ मकई दा

दाने ता भुनदा उधल गई दा
भट्ठी ता तपदी नही निलज्जयो
लज्ज तुहानू नही।

इन गीतों के अतिरिक्त बारात बाँधनी तथा पत्तल में ईष्वर से उनके कार्य संवारने के लिए प्राथर्ना की जाती है जैसे–

ईश्वर हृदय ध्याय के गंगा जलि उठाय
बधी खोला जंज मै आद गणेश मनाय।

इसके बाद छन्द गीतो में हास–विलास तथा मजाक होता है इसमें स्त्रियाँ दुल्हे के बोल चाल की विधि तथा दिमागी सूझ–बूझ की कसोटी को परखने के लिए उससे डोली विदा होने के पूर्व छन्द सुनती है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है–

छन्द परागे आइये जाइये छन्द परागे माला
धी तुहाडी ऐदा रखसा ज्यो उगंली दा छाला।

विदाई सम्बन्धी गीत तथा मृत्यु संबंधी गीत भी स्त्रियों द्वारा ही रचित होते है। पंजाब की अनगिनत विधाओं में से माहिया, ढोला, टप्पे, बोलियाँ, सद, झोक और बिरहड़े आदि है। जिन्हे पंजाबी स्त्रियों ने भावनाओ से पाला है, आशाओं से सींचा है इसी कारण यह अमर हो गए है। बोलियों में ताहने और मिहने का भरमार रहती है उदाहरण तया–

आप सस मंजे लेटदी
सानू मारदी चक्की दे वल सैतां

अर्थात सास को ताहना देती हुई बहू कहती है कि आप तो सास आराम से चारपाई पर लेटती है और मुझे चक्की पीसने के लिए इशारा करती है। प्यार के पक्षो पर स्त्रियों ने सुन्दर लोकगीत गाए है। इनमे भाई–बहन के प्यार का बहुत महत्व है। सुसराल में बैठी बहन किसी त्योहार या पर्व पर पहुचने के लिए अपने भाई की प्रतीक्षा किसी मानव मन से छिपी नही है। वह गाती है–

वीर आई वे भैन दे वेहड़े
पुनया दा चन्न बन के।

जन्म देने वाले माँ–बाप के बाद भाई ही सब से बड़ा सगा होता है। इसी बात का प्रतीक है यह गीत–

सौ–सौ रूख पई लावा, रूख ता हरे भरे
मावा ठंडीया छावा–छावा कौन करे।
वीर मेरे ने बाग लवाईया विच लुआईया छलीयां
जांदेया राहीयां नू राह पई पुछदी कित्थे वीर दीया गलीया।

केवल पंजाबी साहित्य में ही नहीं विष्व भर के साहित्य में अति प्रेम भरे गीत अपने प्रियजनों के नाम लिखे जाते है। ''प्यार'' जीवन में रोटी जैसा सत्य है। स्त्री प्रेम करते समय हृदय की समस्त निधियाँ न्योछावर कर देती है। औरत के गीत भी औरत के प्यार की भाँति महान् है क्योंकि औरत का प्यार बलिदान की नीव पर पलता है। अपने कन्त के लिए किसी ने इस बोली की रचना की है–

''मेरा कन्त सरो दा बूटा, रब कोलो लिया मंग के।''

स्त्रियो ने कई वीर भावना के गीत, ऋतुओं संबंधी गीत रचे है जिनमें बारामासी, ऋतुओं के गीत, लोहड़ी के गीत विशेष महत्व रखते है। नृत्य संबंधी गीतों में गिद्दा, भंगड़ा, झूमर, लुड्डी तथा बच्चों के गीतों में किकली आदि के गीतो में लड़की की उमंगो, खुशियों तथा भावनाओं को ही प्रकट किया जाता है। कार्यगत गीतों में घर में कार्य करती स्त्रियाँ, खेतो में काम करते पुरूष अपने मन की थकान को दूर करने के लिए लोक गीतो का सहारा लेते है। जैसे गावों में स्त्रियाँ इकट्ठी होकर चरखा कातती है, उस समय चरखे की आवाज उनके मन के तारों को छेड़ती है तो चरखे की घूक्कर के साथ आवाज मिलाकर गीता आरम्भ कर देती है। एक स्त्री तुक को पहले गात है, बाकी स्त्रियाँ बाद में उसी तुक को गाती है।

चरखा चन्नन दा शाबा चरखा चन्नन दा
नी मै कत्ता प्रीता नाल चरखा चन्नन दा।

इसी तरह आभूषणो के गीतों में चूड़ा, छल्ला, मुन्दरी पर भी स्त्रियों के रचे कई गीत है। पंजाबियो के लिए प्यार जीवन का ताल है। उनके सब से मधुर लोकगीत वह है जो प्यार की वेदना तथा अरमानों की पीड़ा है। साहित्य संसार में जहाँ प्यार को उच्च स्थान प्राप्त है, वह विरह तथा मिलन ने ही दिया है। इन गीतों में विरह वर्णन भले ही अधिक है परन्तु मिलन का रंग भी कही कम नहीं। परदेस गये हुए पति को बहुत समय हो गया है। साथ ही बियाही सहेलियों की गोद में बच्चे खेलने लगे है अन्त में पत्नी मिट्टी का खिलौना बनाकर अपनी इच्छा पूर्ति करती है। इस भावना से ओत–प्रोत लोक गीत इस प्रकार है–

बागी ता लानीया टाहलिया नी पत्ता वालिया नी मेरा पतला माही
बागी ता लानीया शहतूत बे समझे नू समझ न आई।
तेरे जिहे लख छोकरे वे कनी कोकले वे बागी फुल लियांदे
हस–हस देंदे लोरियां वे तेनू रीस न आवे।

निष्कर्ष

पंजाबी लोक गीतों का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि भले ही हम जितना भी यत्न करें हम इन्हें पूर्णरूपेण सम्मुख नही रख सकते। पंजाब के लोक गीतों में स्त्रियों ने सुई से लेकर तलवार तक अर्थात छोटी से छोटी चीज से लेकर बड़ी से बड़ी चीज किसी को भी माफ नहीं किया। यहाँ तक इन्होने डाची, सुई, चरखा, अमृतसर की बड़िया, पापड़, जुगनी इन सभी पर सुन्दर गीत रच डाले है। विरह और वेदना को लेकर रचे लोक गीत ऐसे है जिन्हे सुनकर पत्थर से पत्थर दिल भी पिघल जाते है और आँखें भर जाती है। इन गीतों के माध्यम से जीवन में विचित्रता बनी रहती है।

इन समूचे पंजाबी लोकगीतो को गाने के लिए अपनी स्वतन्त्र विधाए और राग है। परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में इन धारणाओं में मिलावट होनी आरम्भ हो गई है। इसमें फिल्मी दुनियाँ का सबसे बड़ा हाथ है जो संगीत की धुनो को बिगाड़ रही है। आज के समय की पुकार है कि हम अमीर विरासत को सम्भालने का यत्न करे। लुप्त हो रही लोक संगीत की धुनों को सम्भाले ताकि इस अमीर विरासत को खो न बैठे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

रंधावा, मोहिंदर सिंह (2015). पंजाबी लोक संगीत, वारिस शाह फाउंडेशन, अमृतसर।
प्रीतम, अमृता (2012). पंजाब दी आवाज, शिलालेख पब्लिशर्स, दिल्ली।
बेदी, मोहिंदर सिंह (2017). पंजाब दी लोकधारा, नैशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली।